UNESCO World Heritage Sites in India
"Hill Forts of Rajasthan"

The United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization (UNESCO) seeks to encourage the identification, protection and preservation of cultural and natural heritage around the world, considered to be of outstanding value to humanity. This is embodied in an international treaty called the Convention concerning the Protection of the World Cultural and Natural Heritage, adopted by UNESCO in 1972. There are many UNESCO recognized World Heritage Sites in India. One of them is Hill Forts of Rajasthan. Six Hill Forts of Rajasthan, examples of Rajput military hill architecture, namely Amer Fort, Chittorgarh Fort, Gagron Fort, Jaisalmer Fort, Kumbhalgarh Fort and Ranthambore Fort were included in the UNESCO World Heritage Site list during the 37th meeting of the World Heritage Committee in Phnom Penh during June 2013. World Heritage sites belong to all the peoples of the world, irrespective of the territory on which they are located.

Amer Fort is a fort located near Jaipur, Rajasthan. Located high on a hill, it is the principal tourist attraction in Jaipur. The town of Amer was originally built by Meenas, and later it was ruled by Raja Man Singh-I (21st December, 1550 – 6th July, 1614). With its large ramparts and series of gates and cobbled paths, the fort overlooks Maota Lake, which is the main source of water for the Amer Palace. Constructed of red sandstone and marble, the palace is laid out on four levels, each with a courtyard. It consists of the Diwan-i-Aam, or "Hall of Public Audience", the Diwan-i-Khas, or "Hall of Private Audience", the Sheesh Mahal (Mirror Palace) or Jai Mandir and the Sukh Niwas where a cool climate is artificially created by winds that blow over a water cascade within the palace.

Kumbhalgarh Fort ("Kumbhal fort") is a Mewar fortress on the westerly range of Aravalli Hills, in the Rajsamand district near Udaipur of Rajasthan. It was built during the course of the 15th century by Rana Kumbha. Built on a hilltop 1,100 m (3,600 ft) above sea level on the Aravalli range, the fort of Kumbhalgarh has perimeter walls that extend 36 km, making it one of the longest walls in the world. Kumbhalgarh has seven fortified gateways. There are over 360 temples within the fort. The sand dunes of the Thar Desert can be seen from the fort walls.

Jaisalmer Fort is situated in the city of Jaisalmer, Rajasthan. It is believed to be one of the very few (perhaps the only) "living forts" in the world, as nearly one fourth of the old city's population still resides within the fort. For the better part of its 800-year history, the fort was the city of Jaisalmer. The first settlements outside the fort walls, to accommodate the growing population of Jaisalmer, are said to have come up in the 17th century. Jaisalmer Fort is the second oldest fort in Rajasthan, built in 1156 AD by the Rajput Rawal (ruler) Jaisal from whom it derives its name. The fort stands amidst the sandy expanse of the great Thar Desert on Trikuta Hill.

Gagron Fort is situated in Jhalawar district of Rajasthan. It is an example of a hill and water fort. The fort is surrounded by water bodies from three sides which makes it unique. It has remarkable construction as it takes support from the hill of Burj from one side. The famous fort was built by Raja Bijili Dev in 12th century and it was ruled around 300 years by Khinchi dynasty. The fort stands at the juncture of Kalisindh and Ahu rivers and is surrounded by greenery.

Chittorgarh Fort is one of the largest forts in India. Chittorgarh (garh means fort) was originally called Chitrakut. The fort was the capital of Mewar and is located in the present-day town of Chittor. Set atop a 180 meters high hill this majestic fort features in tales of courage, pride and romance that the bards of Rajasthan have been singing for centuries. The fort, when viewed from above, looks roughly like a fish. Spread across an area of 700 acres, the circumference of the fort alone covers an area of 13 kilometres. There are seven massive gates, safeguarding all the entrances. The main gate is called as Ram Gate. The fort has 65 structures including temples, palaces, memorials and water bodies. There are two prominent towers within the premises of the fort namely Vijay Stambha (Tower of Victory) and Kirti Stambha (Tower of Fame).

Ranthambore Fort lies within the Ranthambore National Park, near the town of Sawai Madhopur. It was built by the Chauhan rulers in the 10th century. Due to its strategic location, it was ideal to keep the enemy at bay. The fort is characterised by temples, tanks, massive gates and huge walls. Constructed in 944 AD, Ranthambore Fort has witnessed many sieges and battles. An architectural marvel, the fort includes many attractions such include Toran Dwar, Mahadeo Chhatri and Sametonki Haveli within its premises.

Department of Posts is pleased to issue a set of six commemorative postage stamps on the theme UNESCO World Heritage Sites in India : Hill Forts of Rajasthan.

Credits:

Text	:	Information collected from online sources
Stamps/Miniature Sheet/FDC/Brochure Cancellation Cachet	:	Shri Brahm Prakash

भारतीय डाक विभाग
**Department of Posts
India**

भारत में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल-I
UNESCO World Heritage Sites in India-I

राजस्थान के पहाड़ी किले
Hill Forts of Rajasthan

विवरणिका BROCHURE

भारत में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल- I "राजस्थान के पहाड़ी किले"

संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) का उद्देश्य विश्व की उस सांस्कृतिक और प्राकृतिक धरोहर की पहचान कर उनकी सुरक्षा और संरक्षण को प्रोत्साहन प्रदान करना है, जो मानव जाति के लिए अत्यधिक मूल्यवान है। इसे, विश्व सांस्कृतिक और प्राकृतिक धरोहर के संरक्षण संबंधी सम्मेलन नामक अंतर्राष्ट्रीय संधि में शामिल किया गया है जिसे यूनेस्को द्वारा वर्ष 1972 में अपनाया गया। भारत में यूनेस्को द्वारा मान्यता प्राप्त अनेक विश्व धरोहर स्थल हैं। 'राजस्थान के पहाड़ी किले' उनमें से एक है। राजस्थान के छह पहाड़ी किले जिनमें आमेर किला, चित्तौड़गढ़ किला, गागरोन किला, जैसलमेर किला, कुम्भलगढ़ किला तथा रणथम्भौर किला शामिल हैं, राजपूत सेना की पर्वतीय वास्तुकला के नमूने हैं। इन्हें, जून 2013 के दौरान नोम पेन में आयोजित विश्व धरोहर समिति की 37वीं बैठक में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थलों की सूची में शामिल किया गया है। विश्व धरोहर स्थलों का संबंध विश्व के सभी लोगों से है, चाहे वे स्थल किसी भी क्षेत्र में स्थित क्यों न हों।

आमेर किला जयपुर, राजस्थान के निकट स्थित है। ऊंची पहाड़ी पर स्थित यह किला, जयपुर का प्रमुख पर्यटन स्थल है। आमेर शहर मूलतः मीणा समुदाय द्वारा बसाया गया था तथा बाद में इस पर राजा मान सिंह प्रथम (21 दिसम्बर, 1550 – 6 जुलाई, 1614) ने शासन किया। विशाल प्राचीरों और श्रृंखलाबद्ध द्वारों तथा पथरीले मार्गों वाले इस किले से माओटा झील स्पष्ट नजर आती है। यह झील आमेर किले की जल आपूर्ति का मुख्य स्रोत है। लाल रंग के बलुआ पत्थर से निर्मित यह महल, चार स्तरों पर बना हुआ है, जिसमें से प्रत्येक में एक–एक आंगन है। इसमें एक 'दीवान–ए–आम' और एक 'दीवान–ए–खास', एक शीश महल अथवा जय मंदिर तथा सुख निवास है जिसमें, महल के भीतर मौजूद एक झरने से होकर गुजरती हुई हवा, कृत्रिम रूप से ठंडक का एहसास पैदा करती है।

कुम्भलगढ़ किला ("कुम्भल किला") मेवाड़ किला है जो राजस्थान में उदयपुर के पास राजसमंद जिले में अरावली की पहाड़ियों की पश्चिमी श्रृंखला में स्थित है। इसका निर्माण राणा कुम्भा द्वारा 15वीं शताब्दी के दौरान करवाया गया। कुम्भलगढ़ किला अरावली पर्वतमाला पर समुद्री तल से 1100 मीटर (3600 फुट) ऊंची पहाड़ी पर स्थित है। इसकी परिधि पर निर्मित दीवार 36 कि. मी. तक फैली है, जो विश्व की सर्वाधिक लंबी दीवारों में से एक है। कुम्भलगढ़ के सात सुदृढ़ प्रवेश द्वार हैं। किले के परिसर में 360 मंदिर हैं। किले की दीवारों से थार रेगिस्तान के बालू के टीलों को देखा जा सकता है।

जैसलमेर किला राजस्थान के जैसलमेर शहर में स्थित है। ऐसा विश्वास है कि यह विश्व के बहुत कम 'आबाद किलों' में से एक (शायद एकमात्र) है। पुराने शहर की लगभग एक चौथाई जनसंख्या अभी भी इस किले के अंदर रहती है। इसके 800 वर्ष के इतिहास के अधिकांश समय तक यह किला जैसलमेर शहर था। कहा जाता है कि जैसलमेर की बढ़ती हुई जनसंख्या को समायोजित करने के लिए 17वीं शताब्दी में किले की दीवारों के बाहर लोगों ने बसना शुरु किया। जैसलमेर किला राजस्थान का दूसरा प्राचीनतम किला है, जिसे राजपूत रावल (शासक) जैसल द्वारा 1156 ईसवी सन् में बनवाया गया। इनके नाम से इसका नाम पड़ा है। यह किला विशाल थार रेगिस्तान के रेतीले विस्तार के बीच त्रिकूट पहाड़ी पर स्थित है।

गागरोन किला राजस्थान के झालावाड़ जिले में स्थित है। यह पहाड़ी और जलदुर्ग का एक उदाहरण है। यह किला तीन ओर से पानी से घिरा होने के कारण अपने आप में अनूठा है। इसका निर्माण बड़ा असाधारण है, क्योंकि यह एक ओर से पहाड़ी के बुर्ज पर टिका हुआ है। इस प्रसिद्ध किले का निर्माण राजा बिजल देव द्वारा 12वीं शताब्दी में करवाया गया और खींची राजवंश द्वारा लगभग 300 वर्षों तक इस पर शासन किया गया। यह किला कालीसिंध और आहु नदी के संगम पर स्थित है और चारों ओर से हरियाली से घिरा है।

चित्तौड़गढ़ किला भारत के सबसे बड़े किलों में से एक है। चित्तौड़गढ़ (गढ़ जिसका अर्थ किला है) को मूलरूप से चित्रकूट कहा जाता था। यह किला मेवाड़ की राजधानी थी। यह चित्तौड़ के वर्तमान शहर में स्थित है। यह 180 मीटर ऊंची पहाड़ी पर स्थित है। इस भव्य किले का वर्णन शौर्य, गौरव और प्रेम गाथाओं में मिलता है जिन्हें शताब्दियों से राजस्थान के लोक गायक गीतों में सुनाते रहे हैं। ऊपर से देखने पर यह किला मछली जैसा दिखता है। 700 एकड़ के क्षेत्र में फैले इस किले की परिधि 13 किलोमीटर है। किले में सात विशाल द्वार हैं जो सभी प्रवेश द्वारों की सुरक्षा करते हैं। मुख्य द्वार को राम द्वार कहा जाता है। किले में 65 संरचनाएं हैं जिनमें मंदिर, महल, स्मारक और कई जलाशय शामिल हैं। किले के परिसर में 2 मुख्य स्तम्भ हैं जिन्हें विजय स्तम्भ और कीर्ति स्तम्भ कहा जाता है।

रणथम्भौर किला रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान में स्थित है जो सवाई माधोपुर के निकट है। इस किले का निर्माण 10वीं शताब्दी में चौहान शासकों ने करवाया था। इसकी अवस्थिति सामरिक है जो इसे शत्रु से सुरक्षा की दृष्टि से अजेय बनाती है। किले में स्थित मंदिर, तालाब, विशाल द्वार और बड़ी दीवारें इस किले की विशेषताएं हैं। 944 ईसवी में निर्मित रणथम्भौर के इस किले ने शत्रुओं की अनेक घेराबंदियां और युद्ध देखे हैं। वास्तुकला की दृष्टि से अद्भुत, इस किले के अपने परिसर में स्थित तोरण द्वार, महादेव छतरी और सामंतों की हवेली आकर्षण के मुख्य केन्द्र हैं।

डाक विभाग भारत में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल : राजस्थान के पहाड़ी किले विषय पर छह स्मारक डाक–टिकटों का एक सेट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार:–

मूलपाठ : ऑनलाइन स्रोतों से संकलित सूचनाओं पर आधारित

डाक–टिकट / मिनियेचर शीट / प्रथम दिवस आवरण / विवरणिका / विरूपण मोहर : श्री ब्रह्म प्रकाश

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	: 1200 पैसा (3), 500 पैसा (3)
Denomination	: 1200p (3), 500p (3)
मुद्रित डाक-टिकटें	: 5.0 लाख प्रत्येक
Stamps Printed	: 5.0 Lakh each
मुद्रित मिनियेचर शीट	: 1.1 लाख
Miniature Sheets Printed	: 1.1 lakh
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्य: ₹ 5.00